# प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति प्राचीनकालीन अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक सर्वतोन्मुखी, लोककल्याणकारी उपादेय है। यह संस्कृति ललित कला तथा अन्य कलाओं का सृजन करती है। भारतीय लोक संस्कृति में ही राजस्थानी संस्कृति का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है, राजस्थान जो कि भारत वर्ष का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है जिसमें वैभव, शूरवीरता, कला संस्कृति राजस्थान के प्रमुख आकर्षण हैं। जिसमें लोक कला को प्रथम माना जाता है।

लोक संस्कृति के अन्तर्गत नृत्य, गीत एवं चित्रकला जैसी अन्य विभिन्न कलाओं का स्थान श्रेष्ठतम है। नृत्य भी मानवीय अभिव्यक्तियों का एक रसमय साधन है। भारतीय नृत्य उतने ही विविध हैं जितनी हमारी संस्कृति। शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्यों की तो कोई गणना ही नहीं की जा सकती। जिस तरह भारत में कोस–कोस में वाणी बदलती है वैसे ही नृत्य शैलियाँ भी विविध हैं। नृत्य हमारी संस्कृति का प्राचीन अंग हैं, मोहनजोदड़ों और हड़प्पा के पुरातात्विक प्रमाण हैं कि नृत्य भारत की प्राचीनतम संस्कृतियों से जुड़ा है। इसी क्रम में लोक संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले वस्त्र परिधानों को भी विशेष महत्व दिया जा सकता है क्योंकि प्राचीनकाल से ही वस्त्र परिधान समाज के विविध वर्गों का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं।

# अनुक्रमणिका


| | | पृ.सं. |
|---|---|---|
| **(अ) प्रथम अध्याय** | | **1-** |
| **प्रथम भाग – राजस्थान का परिचय** | | 1-18 |
| 1 | राजस्थान का इतिहास | 1 |
| 2 | राजपुताना राजस्थान और राजस्थान | 5 |
| **द्वितीय भाग – राजस्थानी लोक कला का विकास/स्वरूप/परिधान** | | 19-45 |
| 1 | राजस्थानी चित्रकला का वर्गीकरण (चित्रकला के अनुसार) | 19 |
| | राजस्थान की मुख्य चित्रशैलियों का वर्णन | 21 |
| | नामकरण | 24 |
| | उद्‌भव और विकास | 28 |
| | प्रारम्भिक राजस्थानी चित्रकला का स्वरूप | 32 |
| 2 | राजस्थान की संगीत परम्परा | 36 |
| | वादन परम्परा | 37 |
| | गायन परम्परा | 38 |
| | लोकनृत्य की ऐतिहासिक परम्परा | 44 |
| **तृतीय भाग – वस्त्र परिधानों का ऐतिहासिक विकास** | | 46-89 |
| | शिरोवस्त्र | 46 |
| | मोहनजोदड़ा और हडप्पा में वेशभूषा | 51 |
| | सिंधु घाटी सभ्यता में वेशभूषा | 51 |
| | साहित्य में भारतीय वेशभूषा | 70 |
| | सांस्कृतिक परिवेश व वेशभूषा | 71 |
| | राजस्थानी पृष्ठभूमि एवं परिधान | 74 |
| **चतुर्थ भाग – विभिन्न लोकनृत्यों में वेशभूषा एवं वस्त्र आकल्पन का प्रयोग** | | 90-121 |
| | वेशभूषा | 90 |
| | विभिन्न लोकनृत्यों में वेशभूषा एवं वस्त्र आकल्पन का प्रयोग | 112 |

**पंचम भाग – नृत्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** 122-160

लोक नृत्य 122

लोकनृत्यों का विकास 127

नृत्य की भौगोलिक दृष्टि 130

राजस्थानी लोक नृत्यों का वर्गीकरण 132

1. क्षेत्र विशेष लोकनृत्य 135

1.1 गैर नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 135

1.2 बम नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 137

1.3 बीकानेर का अग्नि नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 138

1.4 घूमर नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 139

1.5 जोधपुर का डांडिया नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 142

1.6 पूर्वी राजस्थान का गीदड़ नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 144

1.7 घेर नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 147

1.8 कालेलिया नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 149

1.9 गणगौर व इसमें पहने जाने वाले परिधान 151

1.10 तेराताली नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 152

1.11 भवई नृत्य व इसमें पहने जाने वाले परिधान 154

**षष्ठम् भाग – विभिन्न तकनीक से बने परिधान** 161-182

परम्परागत वस्त्र 161

विभिन्न तकनीकी 163

**सप्तम् भाग – विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर प्रयुक्त लोक नृत्य एवं परिधान** 183-214

शुभ शब्दावली जो लोक नृत्यों के गीतों में प्रयुक्त होनी है। 186

राजस्थानी लोकोत्सव एवं पर्व 188

**(ब) द्वितीय अध्याय** **215-289**

**प्रथम भाग –अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण तथा प्रविधि** 215-218

समस्या का औचित्य 215

शोध समस्या में तकनीकी शब्दों का ज्ञान 216

उद्देश्य 217

प्राक्कल्पना 218

शोध विधि प्रयोगात्मक अनुसंधान विविध 218

जनसंख्या एवं न्यादर्श 218

**द्वितीय भाग – प्रदत्तों का संकलन** 219-287

पारम्परिक छीपें 219

पारम्परिक रंगारे 227

पारम्परिक टेक्सटाइल डिज़ाइनर्स 236

पारम्परिक नृत्यकार 252

पारम्परिक वस्त्र आकल्पन शिक्षक 258

पारम्परिक संगीतज्ञ 271

पारमपिकर वस्त्र विक्रेता 282

**तृतीय भाग – प्रदत्तों का विश्लेषण एवं संश्लेषण** 288-289

**(स) उपसंहार** **290-293**

**(द) संदर्भ ग्रन्थ सूची** **294-312**

शोधकर्त्री द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 294

अध्याय से सम्बन्धित संदर्भ ग्रन्थ 295

अन्य संदर्भ ग्रन्थ 308